अनुत्तरित प्रश्न

अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करके इन्सान यह तो जान सकता है कि परमेश्वर है। परन्तु, स्वर्ग से कोई जानकारी मिले बिना, वह अपने सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से कइयों के उत्तर जानने में असमर्थ रहता है।

I. सृष्टि का मूल

स्पष्टत: जब तक कोई यह जानने में उसकी सहायता न करे कि सृष्टि कैसे बनी तब तक मनुष्य इसे नहीं जान सकता। मूसा के मिसरी गुरुओं ने सिखाया था कि सृष्टि गूदे में से निकाली गई थी और पृथ्वी एक गोलाकार अण्डे से निकली थी। अरस्तु की शिक्षा थी कि सृष्टि पदार्थ से बनी है, जबकि एक प्राचीन यूनानी दार्शनिक का कहना था कि यह ''परमाणुओं के आकस्मिक मिश्रण'' से अस्तित्व में आई। 1796 में पियरे लैपलेस का निष्कर्ष था कि घुमावदार नेब्युला (आकाश में [कोहरे की भांति फैला हुआ] क्षीण प्रकाश पुंज) धीरे-धीरे ठोस ग्रहों में बदल गया। 1900 में एफ. आर. मोल्टन और टी. सी. चेम्बरलिन ने दावा किया कि कई टुकड़े सूर्य से दूर गिरकर धीरे-धीरे ठंडे होकर ठोस ग्रह बन गए। जबकि 1960 में यह दावा किया जाता था कि संसार का निर्माण हाईड्रोजन गैस से हुआ है।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि सृष्टि के आरम्भ के अनुमान भी केवल पदार्थ के विकास की सम्भावना की ही चर्चा करते हैं, इसकी नहीं कि वह पदार्थ कहां से आया। इस बात की व्याख्या नहीं की जाती कि वह पदार्थ गूदा था, गोलाकार अण्डा, घुमावदार नेब्युला, परमाणु, सूर्य से गिरा कूड़ा, या हाईड्रोजन गैस था। विद्वान पदार्थ या तत्व के अस्तित्व को कई गैसों की ''अत्यन्त प्राचीन अव्यवस्था'' मानते हैं, परन्तु यह नहीं बताते कि वे गैसें कहां से आईं। वे केवल उसी का अनुमान लगाते हैं जो उन्हें लगता है कि यह गैसों के अस्तित्व में आने के बाद हुआ। यह मानकर कि हाईड्रोजन मूल गैस थी, वे स्वीकार करते हैं कि ''वास्तव में पहले से कुछ था।'' परन्तु वैज्ञानिकों को यह पता नहीं है कि वह क्या था, और यह अस्तित्व में कैसे आया। सृष्टि के प्रारम्भ के बारे में विद्वानों की बात पढ़ने के बाद, कोई उस समाधान के निकट भी नहीं पहुंच सकता जिसका पता उसे आरम्भ करते समय चल गया था।

समस्या के समाधान के लिए मनुष्य की सीमित समझ की दुहाई देकर विशुद्ध मानवीय स्रोतों से मनुष्य की अयोग्यता का बहाना किया गया है। इन्सान को मानना ही पड़ेगा कि वह नहीं जानता कि संसार का आरम्भ कैसे हुआ। जब तक पृथ्वी के बाहर से कोई न बताए तब तक उसके लिए इस बात को जान पाने की कोई आशा नहीं है।

II. मनुष्य का आरम्भ

स्पष्टत: किसी की सहायता के बिना मनुष्य को यह पता नहीं चल सकता कि वह कैसे अस्तित्व में आया था। बीसवीं शताब्दी में यह कहा जाता था कि ''सम्पूर्ण मानव जाति का पिता'' एक ''छोटा फटीचर सा चूहा'' था। चूहे से पहले ''कोई जीवित जैली अर्थात एक लेसदार वस्तु'' थी, परन्तु जैली के आरम्भ की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। यदि जैली को ''आदिकालीन कुण्डों में जैविक अणुओं के रसों'' से और उन रसों को निर्जीव रसायनों से और रसायनों को हाईड्रोजन गैस से निकाला गया था, तो मनुष्य के आरम्भ के प्रश्न का उत्तर तो नहीं मिलता। मनुष्य को हाईड्रोजन से बना बताकर भी हाईड्रोजन के आरम्भ की व्याख्या नहीं होती, और मनुष्य के आरम्भ का प्रश्न भी सृष्टि के आरम्भ के प्रश्न की तरह ही उलझा रहता है।

III. नैतिकता

मनुष्य उच्च नैतिकता को बिना सहायता के नहीं जान सकता। प्रकृति से मनुष्य सही और गलत की कुछ बातें तो जान लेता है; परन्तु ऐसा ज्ञान परिवर्तनशील और अपर्याप्त है। सच्ची नैतिकता की प्रणाली बनाने में मनुष्य की अयोग्यता के कारण ही यूनानी दार्शनिक सुकरात और प्लेटो यह आशा कर सके थे कि परमेश्वर नैतिकताओं में निर्देश देता है।

मनुष्य केवल अपने ही तर्क के प्रकाश में चलता है, यह उसके लिए स्वार्थी और अपना विनाश करने वाला होता है। बहुत से लोगों ने, शत्रुओं से बदला लेने और उनका विनाश करने की ठानी होती है। करुणा को कमजोरी माना जाता है। किसी समय झूठ को पवित्र माना जाता था और आज भी माना जाता है। मतवाला होने को हर जगह शर्मनाक नहीं माना जाता, और व्यभिचार गुप्त ढंग से होता है परन्तु सार्वजनिक रूप से उसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। माना जाता है कि विवाह की शपथ को तोड़ा नहीं जाना चाहिए। कइयों के लिए आत्महत्या एक सद्‌गुण तथा आशीष मानी जाती है। गर्भपात और गर्भ में लड़का या लड़की देखने को प्रोत्साहन दिया जाता है। कई लोगों में, जनाज़ा [अंतिम संस्कार] आनन्दोत्सव की बात है। लोग साधारणत: वैसा जीवन नहीं बिताते जैसा वे जानते हैं कि उन्हें बिताना चाहिए, परन्तु जब तक पृथ्वी के ऊपर से कोई जानकारी न मिले, नैतिक मापदण्ड का प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाता है।

IV. जीवन का लक्ष्य

स्पष्टत: बिना सहायता के मनुष्य जीवन के लक्ष्य को नहीं जान सकता है। जीवन के

सबसे बड़े उद्देश्य के लिए, सबसे बड़ी भलाई की खोज से बढ़कर किसी और समस्या ने ध्यान आकर्षित नहीं किया है। प्राचीनकाल के लोगों में, मनुष्य के अस्तित्व के विषय में तीन सौ के लगभग विचार पाए जाते थे। यह खोज आज भी जारी है। ऊपर से सहायता के बिना, लगता है कि मनुष्य का यह प्रश्न कि वह पृथ्वी पर क्यों है, ऐसे ही बना रहेगा।

V. परमेश्वर से सम्बन्ध

स्पष्टत: बिना सहायता के मनुष्य को परमेश्वर की आराधना करने का पता नहीं चल सकता। बिना सहायता के वह यह जान सकता है कि परमेश्वर है, परन्तु यह नहीं जान सकता कि परमेश्वर उसे आराधना करने और सेवा करने के लिए क्या कहना चाहता है। परमेश्वर की आराधना के लिए मनुष्य के प्रयास बड़े ही दयनीय रहे हैं। बाहरी सहायता के बिना, मनुष्य परमेश्वर को कई देवताओं में विकृत करता रहा है। भारत में करोड़ों देवताओं को पूजा जाता है। बिना अगुआई के मनुष्य समस्त पदार्थ को ही जीवित और व्यक्तिगत मान लेता है। वह यह मानने लगता है कि पत्थरों, पेड़ों और बादलों में प्राण हैं। वह अन्य जीवित या मृत लोगों को पूजने लगता है। बिना ईश्वरीय निर्देश के मनुष्य व्यभिचार को मन्दिर की उपासना का भाग बना लेता है। क्रुद्ध देवताओं को प्रसन्न करने के प्रयास में उसने पिछले समय में मानव बलियां भी दी हैं। इन्सान को उसके ही दिमाग़ के सहारे छोड़ देने पर परमेश्वर की आराधना और सेवा करने के ढंग के प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता है।

VI. अनश्वरता

स्पष्ट है कि बिना सहायता के मनुष्य को अनश्वर होने का कोई आश्वासन नहीं मिल सकता। सब सामान्य लोग अनन्तकाल तक जीवित रहने की आशा करते हैं, परन्तु बिना ईश्वरीय सहायता के, किसी के पास भी जीवन पर्यन्त वास्तविकता का कोई प्रमाण पत्र नहीं है। अय्यूब 14:14 में हमें एक प्रश्न मिलता है जिसका उत्तर मनुष्य अपने आप नहीं दे सकता: ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?''

VII. प्रश्न

मनुष्य के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों का सम्बन्ध सृष्टि के आरम्भ, स्वयं मनुष्य के आरम्भ, नैतिकता, सर्वोच्च भलाई, परमेश्वर के साथ मनुष्य का सम्बन्ध और सदाकाल तक जीवित रहने से होता है। इन प्रश्नों के उत्तर मानवीय ज्ञान से नहीं मिल सकते। बिना ईश्वरीय सहायता के मनुष्य जीवन के अर्थ की खोज में रहता है। यिर्मयाह 10:23 दावा करता है ''कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अपने नहीं हैं।'' करोड़ों लोगों ने बाइबल के इस कथन को झुठलाने का प्रयास किया है, जिससे इसके सही होने का ही पता चलता है। सुकरात, प्लेटो, सिसेरो, डिमोक्रिट्स और जॉन लॉक संसार के उन संवेदनशील बुद्धिजीवियों में से हैं जिन्होंने जीवन के अधिकतर प्रश्नों के साथ व्यवहार में मनुष्य की अक्षमता के बारे में लिखा है।

मनुष्य की अक्षमता स्वीकार्य लगती है इसलिए तर्क कहता है कि मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आकाश से वर्षा और फलदायक ऋतुएं देने वाला परमेश्वर उसे मानसिक, नैतिक, और आत्मिक आवश्यकताओं के सम्बन्ध में निःसहाय नहीं छोड़ेगा। इसलिए यह मानना तर्कसंगत है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के लिए बाहर से रास्ता निकालकर आवश्यक जानकारी भेजता है। अन्य शब्दों में, यह बात भी तर्कसंगत है कि ईश्वरीय प्रेरणा से मिला प्रकाशन इस संसार में मनुष्य के पांवों के लिए दीपक और उसके पथ के लिए रोशनी के रूप में उतरे।

VIII. उत्तर

बाइबल की खोज से पता चलता है कि जो लाभ मनुष्य स्वयं अपने लिए प्राप्त करने में असमर्थ है वही सृष्टिकर्त्ता ने उसे उपलब्ध करवा दिए हैं। साधारण मनुष्य का महत्व एक पशु से कहीं अधिक है, और वह केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहता। उसकी सबसे बड़ी आवश्यकताएं शारीरिक नहीं हैं क्योंकि बाइबल उसकी सबसे बड़ी आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिलाती है। जैसे देह को ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, वैसे ही मनुष्य की आत्मा को बाइबल की आवश्यकता होती है। बाइबल जीवन तथा भक्ति से सम्बन्ध रखने वाली सभी बातें उपलब्ध कराती है।